।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः।।

उद्गारशतकम्

ग्रन्थ प्रणेता

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
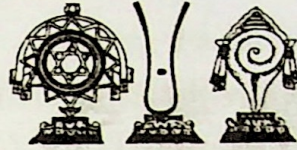
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

उद्गारशतकम्

ग्रन्थ प्रणेताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा, गुरुवार

फाग महोत्सव, दिनाङ्क ८/३/२०१२

वि० सं० २०६८ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०८

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
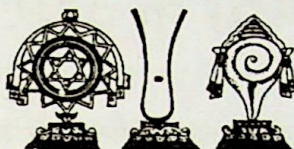
।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

समर्पणम्

आचार्यश्रीघनश्यामशरणाऽङ्घ्रिसुपङ्कजे ।
एतदुद्धारशतकमर्प्यते श्रद्धया मुदा ।।

मिति – फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा
गुरुवार, वि० सं० २०६८
दिनाङ्क – ८ / ३ / २०१२
फाग महोत्सव

त्वत्पदपङ्कजभक्तिकामः –
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

आचार्यश्री के उद्गार मननीय है

महापुरुषों के वचन आनन्दमय जीवन यापन का सर्वश्रेष्ठ साधन हैं। यदि प्राणीमात्र आचार्यों की वाणी को हृदयङ्गम करले तो फिर इस भवाटवी में पशुवत् भटकने का भय समाप्त होजाता है। महाभारत का यह वचन कितना सार्थक है।

''महाजनो येन गतः स पन्था''

वस्तुतः मार्ग तो वही श्रेष्ठ है जिसका संकेत महापुरुष करते हैं। प्राणीमात्र के लिये उसका अनुसरण करना ही परम हितकर है, क्योंकि सत्पुरुषों का प्रत्येक उद्गार उनके जीवन का अनुभव होता है और ''सर्वभूतहिते रताः'' इस वचन के अनुसार महापुरुष अपने श्रेष्ठ एवं अनुभूत उद्गारों से जन कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

ऐसे परम श्रेयःप्रद कार्य को हमारे पूज्य आचार्यचरण अनेक वर्षों से सम्पादित करते आरहे हैं। इसी शृङ्खला में प्रस्तुत ग्रन्थ ''उद्गारशतक'' इसका एक उदाहरण है। इस ग्रन्थ के सरल गद्यात्मक उद्गार अवश्य ही समस्त श्रद्धालु सनातन धर्मावलम्बियों का मार्गदर्शन करेंगे अतः सबको अपने दैनिक जीवन के प्रत्येक क्षणों में हितकारी उक्त उद्गार वचनों का अनुशीलन पूर्वक पठन करना हितकर रहेगा।

फाल्गुन शु० पूर्णिमा, गुरुवार
वि. सं. २०६८ दि. ८/३/२०१२

--युवराज श्यामशरणदेव
अ. भा. जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

उपदेशामृत है उद्वारशतक

वेदान्तदेशिकों ने प्रमेय पदार्थों के परिज्ञान के लिए प्रत्यक्ष; अनुमान, शब्द ये तीन प्रमाण स्वीकृत किये हैं। इन्द्रियार्थसन्निकर्ष-जन्य ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं, व्याप्तिविशिष्टपरामर्शजन्य ज्ञान अनुमान कहलाता है। प्रत्यक्ष और अनुमान से भिन्न अतीन्द्रिय भगवद्विषयक ज्ञान जो शब्द समूह रूप वेदादि शास्त्रों से किया जाता है वह शब्दजन्य ज्ञान है, शब्द प्रमाण ही शास्त्र समुदाय है। इन्हीं प्रत्यक्षानुमान शब्दों द्वारा ही परोक्ष-अपरोक्ष, लौकिक-पारलौकिक, आसन्न-विप्रकृष्ट समस्त पदार्थ जगत् का परिबोध किया जाता है। इन सबमें प्रबल प्रमाण शब्द को ही माना गया है। शास्त्रकारों ने शब्द का लक्षण किया है ''आप्त वाक्यं शब्दः।'' वह शब्द वैदिक, लौकक भेद से दो प्रकार का है। वैदिक शब्द भगवन्निश्वास रूप अपौरुषेय होने से या ईश्वर प्रोक्त होने से आप्ततम है। अतः सर्वोपरि निर्वाध प्रमाण है। तदनु वेदानुकूल मन्वादिप्रोक्त स्मृति-पुराणेतिहासादि आप्ततर वाक्य हैं।

आप्त पुरुष वे आचार्य है जो सदा सत्यनिष्ठ, शास्त्रनिष्ठ, ब्रह्मनिष्ठ होते हुए रागादिवशात् कभी भी असद् वाक्य का व्यवहार नहीं करते, उनको संसार के समस्त मानव आप्त पुरुष कहकर प्रमाणरूप में उनके वचनों पर विश्वास करते हैं और तदनुसार व्यवहार करते हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्का-चार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

द्वारा शास्त्र प्रतिपाद्य एवं स्वानुभूत विषयों को लक्ष्य करके लोक शिक्षार्थ सद्यः प्रणीत ''उद्धारशतकम्'' नामक सूत्रात्मक संस्कृत गद्यग्रन्थ का सानुवाद प्रकाशन किया जारहा है जो समस्त भगवज्जनों को निरन्तर सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता रहेगा ऐसा दृढ विश्वास है। पूज्य आचार्यश्री ने वार्धक्य एवं अस्वस्थ अवस्था में भी लोकहित के लिए अनवरत सारस्वतधारा को विभिन्न रूप में प्रवाहित कर रखा है। इससे अव्यवहित पूर्व भी ''प्रेरणाशतकम्'' नाम से सस्कृत पद्यात्मक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ था, जिसका लोकार्पण। भागवत कथा महोत्सव के अवसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीमदवल्लभाचार्य स्वामी श्रीवल्लभरायजी महाराज सूरत के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ था। प्रस्तुत उद्धारशतक सरल व्यावहारिक शब्दावली में निर्मित होने से सर्वजन संवेद्य है। अतः श्रद्धालुजन इसका नित्य पठन, अनुशीलन कर अपने जीवन को पावनतम बनायेंगे इसी विश्वास के साथ लेखनी को विराम देता हूँ।

आचार्यश्रीचरणानुरक्तः-

निम्बार्कभूषण वासुदेवशरण उपाध्याय
व्या० सा० वेदान्ताचार्य
प्राचार्य - श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद जि. अजमेर (राज.)
वास्तव्य-
टिकुलीगढ ग्राम विकास समिति-७ (भैरवा)
जि. रूपन्देही, लुम्बिनी अंचल (नेपाल)

शुभमिति-
फाल्गुन शु. १५ गुरुवार
वि. सं. २०६८
दि. ८/३/२०१२

दूरभाष मो.
००९७७-९८०४४०४७१३

प्राक्कथनम्

''संस्कृतं संस्कृतिश्चैव श्रेयसे समुपास्यताम्'' इत्यवधारणां चेतसि निधाय श्रद्धास्पदानां प्रातःस्मरणीयानाम्, अनन्तश्रीविभूषितानां श्री ''श्रीजी'' महाराजानां भक्तिपरक-उपदेशात्मक-भगवच्चिन्तनपरक भजनगीतस्तोत्र छात्रविवेक-दर्शनादि विभिन्न स्वरचित ग्रन्थमालापरम्परायां शास्त्रानुशीलनपरिणामरूपेण एकोनचत्वारिंशत्तमम्, इदम्, अद्भुतम् ''उद्गारशतकम्'' लोकप्रेरणादृष्ट्या प्रकाशपथम्, आयाति। यस्मिन् लोकोपकारकभावनया भगवच्चिन्तन-मातृ-पितृ-सेवा-पर्यावरणसुरक्षा-प्रदूषणमुक्ति-परोपकार-दया-सत्संग-सत्य-अस्तेयादि मानवीयगुणाः सर्वदा आचरणीया इत्युपदिष्टम्। एवञ्च ''ज्ञानं भारः क्रियां विना'' इति सदुक्ति वृद्धत्वेऽपि विभिन्न रोगग्रस्तत्वेऽपि आचार्यचरणाः अहर्निशं चरितार्थयन्ति। भगवन्तं सर्वेश्वरं प्रार्थये यत्-आचार्यचरणेभ्यः आरोग्यं प्रदेयात्।

चरणचञ्चरीकः-

नरेन्द्रकुमार शास्त्री

व्याकरणाचार्य एम. ए. (संस्कृत)

प्राध्यापको व्याकरणविभागाध्यक्षः

श्रीसर्वेश्वर संस्कृतमहाविद्यालय, अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्

अद्भुत ग्रन्थ उद्धारशतक

महान् विभूतियाँ लोकोपकार हेतु स्वतः ही मनसा, वाचा, कर्मणा सदा तत्पर रहते हैं। इस वचनामृत को चरितार्थ करते हुए आचार्यश्रीचरण श्री ''श्रीजी'' महाराज भगवद् भक्तों एवं प्राणीमात्र पर स्वतः स्फूर्त कृपादृष्टि से उनके कल्याणार्थ जीवनोपयोगी यह अद्भुत ग्रन्थ ''उद्धारशतक'' की रचना की है।

संस्कृत गद्य के साथ-साथ हिन्दी भाषा में अनुवाद कर सामान्य जनों पर विशेष अनुग्रह किया है। संस्कृतानभिज्ञ जिज्ञासु जन इस शतक का मनन-चिन्तन करते हुए अपने जीवन को कृतार्थ करेंगे।

चरणसेवक :
श्रीओमप्रकाश शर्मा शास्त्री
निम्बार्कभूषण, निजी सचिव
अ. भा. जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) एवं
मुकुन्दपुरा - जयपुर

'उद्धारशतकम्' लोकहितार्थ एक पावनप्रेरणा

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की अभिनव रचना 'उद्धारशतकम्' आपश्री की तपस्यानुभूति का साक्षाद् दर्पण है। संस्कृत भाषानुबद्ध इस रचना की विशेषता यह है कि पद्य वा छन्द में न होकर गद्य-निबद्ध शताधिक उद्धार स्वरूप वचन हैं। इन लघु वचनों में सूत्रवत् वह भावना समाहित है जिससे मानव का लौकिक एवं पारलौकिक कल्याण सुनिश्चित है। अपितु यह कहना समुचित होगा कि चराचर समस्त लोक हितार्थ मंगलमयी प्रेरणा पूज्य आचार्यश्री ने उद्धारशतकम् के माध्यम से अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर प्रभु की परम कृपा से की है।

यह कहना इसलिए भी सार्थक है कि श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में प्रतिष्ठित श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्यवर्य स्वभावतः महर्षि सनकादि संसेव्य अर्चा विग्रह शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु के परम कैङ्कर्यत्व में तल्लीन रहते हैं। आचार्यों का समग्र जीवन मनसा वचसा कर्मणा श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में सर्वदा समर्पित रहता है। जब सेवा वाणी से होती है तब लोक को ऐसी अनुपम कृतियाँ प्रसाद स्वरूप मिलती है। यह परम्परा आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य से लेकर वर्तमान पूज्य आचार्यश्री पर्यन्त निर्बाध गति से चली आरही है।

कतिपय दिव्य रचनायें निम्बार्क-सिद्धान्त को विश्व विश्रुत करती हैं। दार्शनिक सिद्धान्त की पराकाष्ठा से लेकर भगवद्भक्ति की

अतिशय सारल्य वाणी की साधना में परिलक्षित होता है। वर्तमान आचार्यवर्य ने संस्कृत, हिन्दी व व्रजभाषा में ऐसी अनेक अनुपम कृतियों की रचना की है। जिनकी विशेषता का वर्णन अनुभूति से ही किया जा सकता है।

आपश्री ने 'उद्धारशतकम्' में प्रभु की आराधना, गोरक्षा, देवमन्दिरों की सुरक्षा, आज लोक में हो रहे विविध दुराचरण से पवित्र गंगा सदृश पुण्य सरिताओं के प्रदूषण विषय के साथ-साथ स्वानुभूत कतिपय भावों को प्रकट करते हुये लोक से सर्वविध भगवत्सेवा, सत्संग, परोपकार में संलग्न रहने की प्रेरणा प्रदान की है।

मेरे जैसा अकिंचन पूज्य आचार्यश्री के लोकोत्तर दिव्य रचना के विषय में क्या निवेदन कर सकता है। फिर भी बाल चपलता अपनी भावना को प्रकट किये बिना रह नहीं सकता। श्रीसर्वेश्वर प्रभु से यह अभ्यर्थना पुनः-पुनः कर सकता हूँ कि पूज्य आचार्यश्री की लेखनी इसी प्रकार निर्बाध अनवरत चलती रहे।

--मुकुन्दशरण उपाध्याय
प्रधानाध्यापक
राजकीय प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय
सुरसुरा, किशनगढ, अजमेर (राज०)

उद्गारशतकरहस्य

श्रुति-स्मृति-पुराणादि ग्रन्थों में एवं महाभारत में समस्त ज्ञान-विज्ञान निहित है। इन्हीं शास्त्रों की पद्धति का अनुसरण रूप यह ''उद्गारशतक'' है। इस लघुरूपात्मक पुस्तक में प्रेरणादायी १०३ सानुवाद संस्कृत गद्यात्मक वचन दिये गये हैं जो सर्ववेद्य हैं। विज्ञजनों को इसमें से जो भी वचन हृदयग्राही हों, उनको अपने उपयोग में लें।

यह मानव जीवन क्षणभङ्गुर है एतावता अपने इस मानव जीवन को श्रीभगवत्परक करना परम अभीष्ट है। वे सर्वज्ञ अखिलान्तरात्मा श्रीसर्वेश्वर राधामाधव भगवान् अनन्त कृपा के धाम हैं, अकारणकरुणावरुणालय हैं कब अपने प्रपन्न भक्त पर अनुग्रह वृष्टि कर दें, अतः सतत उन सर्वद्रष्टा श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अनुस्मरण किया जाय।

वे करुणार्णव भगवान् श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद् गीता में उपदेश कर रहे हैं--''ये यथा मां प्रपद्यन्तेतांस्तथैव भजाम्यहम्।'' जो शरणागत भक्त जिस प्रकार से मेरा भजन करता है उसी प्रकार मैं भी उसका भजन करता हूँ। कितनी कृपालुता है श्रीहरि की अतः ऐसे अनुग्रह विग्रह रूप श्रीप्रभु का प्रतिपल स्मरण करना परम कर्तव्य है।

इन्हीं श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपाप्रसादस्वरूप यह ''उद्धारशतक'' जिसकी रचना सम्भव हुई। परम श्रद्धालु भगवज्जनों को चाहिए कि इस प्रस्तुत ग्रन्थ का अनुशीलन कर इससे लाभान्वित हों।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

मिति – फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा
गुरुवार, वि० सं० २०६८
दिनाङ्क – ८ / ३ / २०१२
फाग महोत्सव

उद्धारशतकम्

कृष्णं सर्वेश्वरं नित्यं प्रणम्य तन्यते प्रिग्गम्।
श्रीगुरूंश्च हृदा नत्वोद्धारशतकमद्भुतम्।।

श्रीसर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण जो परम प्रिय है उनको नित्य प्रणाम करके एवं स्वकीय श्रीगुरुचरणारविन्दों की अन्तःकरण से वन्दना करके यह ''उद्धारशतक'' जो अद्भुत प्रेरक है उसकी रचना कर रहे हैं।

१ - **श्रीसर्वेश्वरराधामाधव भगवतः समाराधनं सातत्येन विधातव्यम्।**

१ - श्रीसर्वेश्वर राधामाधव भगवान् की आराधना निरन्तर करते रहना चाहिए

२ - **शास्त्रेषु परिवर्णितनवधाभक्तिषु श्रीराधाकृष्णभगवन्नामसंकीर्तनभक्तिरेव कलियुगे भगवद्भक्तैः समाचारणीयाऽस्ति।**

२ - शास्त्रों में कही गई नवधा भक्ति में श्रीराधाकृष्ण भगवान् की श्रीनाम संकीर्तन भक्ति ही इस कलियुग में भगवद्भक्तों को करनी चाहिए।

३ - **शास्त्रेषु सात्विक भगवदीययज्ञानां महत्वं वरीवर्ति, अतस्तेषां विधाने गोघृतस्यैव प्रयोगो विधातव्यः।**

३ - शास्त्रों में सात्विक श्रीभगवत्परक यज्ञों का महत्व कहा गया है, अतः उन यज्ञों में गोघृत का ही उपयोग किया जाना चाहिए।

४ - इदं नृजीवनं परमं दुर्लभतममस्ति सुतरां शरीरमिदं समुपलभ्य नैरन्तर्येण श्रीसर्वेश्वरप्रभोः स्मरणं विधेयम्।

४ - यह मानव शरीर प्राप्त करना अति दुर्लभ है इसलिए इस शरीर को प्राप्त कर अनवरत श्रीसर्वेश्वर प्रभु का स्मरण करना प्रमुख कर्तव्य है।

५ - भक्तैः प्रत्यहं श्रीभगवन्मन्दिरे श्रीराधामाधव भगवतो दर्शनं विधाय तुलसीचरणामृतञ्च गृहीत्वैव स्वकीयं सत्कर्मादिकं कर्तव्यम्।

५ - भक्तजन प्रतिदिन श्रीहरि मन्दिर में श्रीराधामाधव भगवान् के दर्शन करके तथा तुलसी चरणामृत लेकर अपने समुचित कार्यों को करें।

६ - सम्प्रति समग्रविश्वस्मिन्महत्यशान्तिर्दरीदृश्यतेऽस्य--प्रमुखं कारणमिदमेव यल्लोकाः श्रीहरेराराधनां सर्वथातो हित्वा लौकिकासत्कर्मणि लिप्ताः सन्ति।

६ - वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में बहुत ही अशान्ति देखी जारही है, इसका मूल कारण यही है कि जन समुदाय श्रीप्रभु की आराधना को सर्वथा छोड़कर इस जगत् के अशुभ कर्मों में लगे हुए हैं।

७ - सम्पूर्णमानववर्गस्येदं परमं कर्तव्यमस्ति यन्महापुरुषाणां

पावनः सत्सङ्गो विधेयः ।

७ - समस्त जन समुदाय का यह परम कर्तव्य है कि जो महापुरुषों का पवित्र सत्सङ्ग करे।

८ - **उत्तमश्लोक पुरुषाणां सत्सङ्गेन श्रीभगवच्चरणारविन्देषु परमानन्यभक्तिः समुत्पद्यते ।**

८ - श्रेष्ठ पुरुषों के सत्सङ्ग से श्रीभगवच्चरणाविन्दों में परमोत्तम अनन्य भक्ति हो जाती है।

९ - **येषां भगवज्जनानां जीवने श्रीहरेरनुरागः प्रभवति ते खलु परम सौभाग्यशालिनः सन्ति ।**

९ - जिन भगवज्जनों के जीवन में श्रीहरि परक अनुराग होता है वे निश्चित रूप से परम सौभाग्यशाली हैं।

१० - **ये भगवद्भक्ताः तीर्थयात्रासम्पादने निरताः सन्ति ते वै पूर्णतो धन्यवादार्हाः प्रभवन्ति ।**

१० - जो भगवद्भक्त तीर्थयात्रा करने में लगे रहते हैं वे निश्चय ही सभी प्रकार से धन्यवाद के पात्र हैं।

११ - **श्रीवृन्दावनाऽयोध्यादिधामयात्रा भक्तजनैः सश्रद्धं कर्तव्या ।**

११ - श्रीवृन्दावनधाम एवं अयोध्याधाम आदि भगवद्-धामों की यात्रा भक्तजनों को श्रद्धापूर्वक करनी चाहिए।

१२ - **श्रीमद्भागवत--श्रीमद्भगवद्गीता--रामायणादि सद्-ग्रन्थानां प्रत्यहमनुशीलनं विधेयं भक्तजनैः ।**

१२ - श्रीमद्भागवत, श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीरामायण प्रभृति उत्तम

ग्रन्थों का प्रतिदिन अनुशीलन (मनन) भक्तजनों द्वारा किया जाना चाहिए।

१३ - **स्वेष्टप्राप्त्यर्थमञ्जनीनन्दनश्रीहनुमदुपासना समा--चरणीया।**

१३ - अपने परमाराध्य की प्राप्ति के लिए अञ्जनीनन्दन श्रीहनु-मानूजी की उपासना करना अभीष्ट है।

१४ - **समस्तगोवंशरक्षणोपायः समग्रगोभक्तजनैस्तथा विभिन्न-प्रान्तप्रशासकैः केन्द्रप्रशासकैश्च सर्वरीत्या द्रुतमेव नितान्तरूपेण सम्पादनीयः। अतश्च गोबधावरोधः सर्वथा कर्तव्यः।**

१४ - समस्त गो एवं गोवंश रक्षा के लिए सम्पूर्ण गोभक्तजन तथा विभिन्न प्रान्तों एवं केन्द्र प्रशासकों द्वारा सभी प्रकार से अति शीघ्र इस कार्य को करना नितान्त आवश्यक है और इसके साथ ही तत्काल गोबध को समाप्त किया जाना चाहिए।

१५ - **देवमन्दिराणां सर्वविध मर्यादा-सुरक्षार्थं सर्वजनैः सर्व-प्रशासकैश्चाऽथमन्दिरव्यवस्थापकैरपि यतितव्यम्।**

१५ - देव मन्दिरों की सभी प्रकार की मर्यादा की सुरक्षा हेतु समस्त जन समुदाय एवं सभी प्रशासक और मन्दिर के व्यवस्थापक अर्चक को प्रयत्न करना परम कर्तव्य है।

१६ - **देवमन्दिरेषु स्व सर्वकारस्य देवस्थानविभागेन हस्तक्षेपः सर्वथैवाऽनुचितः।**

१६ - देव मन्दिरों में अपनी सरकार के देवस्थान विभाग द्वारा हस्तक्षेप सभी प्रकार से अनुचित कार्य है।

१७ - **पूर्वदिशि श्रीजगन्नाथपुरीधाम्नः पश्चिमदिशि श्रीद्वारकाधाम्न उत्तरदिशि श्रीबद्रीनाथधाम्नस्तथा दक्षिणदिशि श्रीरामेश्वरधाम्नो यात्रा कर्तव्या भक्तजनैः ।**

१७ - पूर्वदिशा में श्रीजगन्नाथपुरी धाम की, पश्चिम दिशा में श्री द्वारका धाम की, उत्तर दिशा में श्रीबद्रीनाथ धाम की एवं दक्षिण दिशा में श्रीरामेश्वर धाम की यात्रा भक्तजनों द्वारा की जानी चाहिए।

१८ - **श्रीनिम्बार्कतीर्थस्य माहात्म्यं श्रीपद्मपुराणे वर्तते, अतो भगवद्भक्तैरेतत्तीर्थस्य निर्मले जले स्नानादिकं विधायाऽऽचमनमार्जनादिकार्यं सम्पाद्य तथा च तस्य परिक्रमणं विधेयं ततः परं सद्विप्रेभ्यो दानदक्षिणादि सत्कर्मसम्पादनं परमावश्यकमस्ति । अथ च निम्बार्कतीर्थस्थले समुल्लिखित तीर्थमर्यादाऽपि परिपालनीयाऽस्ति ।**

१८ - श्रीनिम्बार्कतीर्थ का माहात्म्य श्रीपद्मपुराण में वर्णित है, अतएव भगवद्भक्तजनों को इस तीर्थ के निर्मल जल में स्नान, आचमन, मार्जन आदि कार्य करके और तीर्थ की परिक्रमा करे तथा उसके पश्चात् उत्तम विप्रों को दान-दक्षिणा प्रदान करना अति आवश्यक है। और निम्बार्कतीर्थ

पर लिखित तीर्थ की मर्यादा का पालन करना आवश्यक है।

१९ - **सुरभारतीभाषाऽध्ययने समेषां भारतवर्षवास्तव्यानां परमा रुचिर्भवेदिति नितान्तरूपात्मकमत्यावश्यकं कार्यमस्ति।**

१९ - संस्कृत भाषा के पढने में समस्त भारतवर्ष के निवासीजनों की अतिशय रुचि हो यह सभी प्रकार से अतीव आवश्यक कार्य है।

२० - **श्रीगङ्गा-यमुनाप्रभृति परम पुण्यतोयानां पावनसरितां प्रदूषणनिवारणाय स्वदेशप्रशासकानां साधु-महात्मसुधी-सन्यासी-धर्माचार्य-भगवज्जना-नामनिवार्यरूपेण नितान्तकर्तव्यं विद्यते।**

२० - श्रीगङ्गा-यमुना आदि परम पुण्य सलिला पावन सरिताओं में जो अत्यधिक प्रदूषण बढ रहा है उसके निवारण के लिए अपने देश के प्रशासक तथा साधु-महात्मा-विद्वान्, सन्यासी, मण्डलेश्वर, महान्त, धर्माचार्य, भगवज्जनों को अनिवार्य रूप से इस कार्य को करना परम आवश्यक कर्तव्य है।

२१ - **पर्यावरणनिरोधार्थं नानाविधपादपाऽऽरोपणं सर्वकारैः समस्त जनसमुदायैर्नितान्ततया करणीयम्।**

२१ - पर्यावरण के निरोध हेतु विभिन्न वृक्षों का आरोपण अपनी सरकार तथा सभी जन समुदाय के द्वारा अत्यावश्यक रूप

से किया जाना चाहिए।

२२ - **विप्रादीनां पावनगृहेषु तुलसीसमर्चना प्रत्यहं करणीया।**

२२ - ब्राह्मणादिक के पवित्रघरों में तुलसी की सम्यक् प्रकार से सेवा की जानी चाहिए।

२३ - **विविध पशु-खेचरादिनां कृते तदनुकूलानुसारेणाहार-व्यवस्था विधातव्या समग्रमानवैः।**

२३ - नानाविध पशु-पक्षियों के लिए उनको जिस प्रकार अनुकूल हो उसी रूप में आहार व्यवस्था की जानी चाहिए समस्त मानवमात्र के द्वारा।

२४ - **ये खलु विद्यार्थिनः सन्ति ते तावत्सर्वदा विद्याध्ययने दत्तचित्ताः प्रभवन्तु।**

२४ - जो विद्यार्थीवृन्द हैं वे सर्वदा विद्या के पठन में मन लगावें।

२५ - **या मातरः सन्ति भगिन्यः सन्ति बालिकाः सन्ति तासां सुरक्षार्थं सर्वैः जनैः सर्वदा प्रयत्नः करणीयः।**

२५ - जो मातायें, बहिन, बालिकायें हैं उनकी सुरक्षा हेतु समस्त जन समुदाय को निरन्तर प्रयत्न पूर्वक तत्पर रहना चाहिए।

२६ - **ये च जरावस्थापन्नाः किंवा रुजाक्रान्ता जना आहोस्विन्मातरः सन्ति तत्सेवार्थं स्वस्थैर्जनैः प्रयतितव्यम्।**

२६ - और जो वृद्धावस्था वाले अथवा किसी रोग विशेष ग्रस्त हो ऐसे व्यक्तियों अथवा माताओं की स्वस्थ-जनों द्वारा उनकी सेवा की जानी चाहिए।

२७ - **प्राणीमात्रस्य रक्षार्थं सर्वे जनाः सर्वदा सन्नद्धाः प्रभवन्तु।**

२७ - प्राणीमात्र की रक्षा के लिए सभी व्यक्तियों को सब समय तत्पर रहना चाहिए।

२८ - **ग्रीष्मकाले च पशु-पक्षिणां कृते जल व्यवस्थाऽनि-वार्यरूपेण कर्तव्या भावुकजनैः ।**

२८ - ग्रीष्म ऋतु में पशु--पक्षियों के लिए जल की व्यवस्था भावुकजनों के द्वारा अत्यावश्यकरूप से की जानी चाहिए।

२९ - **कार्तिक-माघ-वैशाखमासे कस्मिन्नपि पावने तीर्थ-स्थले स्नानमार्जनादीनां परमं महत्वं वर्तते, अतो ये भगवद्भक्ताः किंवा भक्तिमत्यो मातरः सन्ति तेषां कृते मास त्रयेऽपि स्नानादिकं विधातव्यमस्ति परं स्वास्थ्यानुकूलतां विज्ञाय तदनुसारेण कार्यमिदं करणीयम् ।**

२९ - कार्तिक-माघ-वैशाख महिना में किसी भी पवित्र तीर्थस्थल में स्नान-मार्जन आदि का बड़ा महत्व है, इसलिए जो भगवद्भक्त पुरुष अथवा मातायें हैं उनको इन वर्णित तीन मास में स्नानादि का विधान है किन्तु स्वास्थ्य की अनुकूलता जानकर ही उसके अनुसार यह कार्य करना चाहिए।

३० - **सूर्य-चन्द्र-ग्रहणावसरे संक्षिप्तरूपेण शुद्धगोघृतहवि-ष्यादिना हवनादिकार्यं सम्पादनीयम् । ग्रहणशुद्धि-पश्चात् कस्मिन्नपि पावनतीर्थे स्नानादिकं विधेयम् । ततः परं उपनीतै र्द्विजै र्नवीनयज्ञोपवीतधारणं**

परञ्चावश्यमस्ति। अनन्तरञ्च विप्रेभ्यो दानदक्षिणादिकं प्रदातव्यम्।

३० - सूर्य-चन्द्र के ग्रहण के समय संक्षिप्त रूप से शुद्ध गोघृत शाकल्यादि सामग्री द्वारा हवन करना चाहिए। ग्रहण शुद्धि के पश्चात् किसी भी पावनतीर्थ में स्नानादिक करना चाहिए। उसके पश्चात् धारण किये हुए विप्रों को नवीन यज्ञोपवीत धारण करना आवश्यक है, उसके अनन्तर विप्रजनों को दान-दक्षिणा से सन्तुष्ट किया जाना चाहिए।

३१ - श्रीमद्भागवतस्य कथा शास्त्रज्ञेन पवित्रविप्रेण तत्राऽपि सुदीक्षित वैष्णवेन विरक्तेन किंवा सद्गृहस्थ शास्त्रज्ञेन सुदीक्षितेन विप्रवैष्णवेन च कार्या।

३१ - श्रीमद्भागवत की कथा शास्त्रों के योग्य विद्वान् पवित्र ब्राह्मण और उसमें भी वैष्णवी दीक्षा प्राप्त हो और विरक्त हो अथवा सद्ग्रहस्थ शास्त्रज्ञ सद्गुरुदेव द्वारा दीक्षित विप्र वैष्णव हो उससे करानी चाहिए।

३२ - प्रभाते स्नानादिकं विधाय ततश्चोद्ध्र्वपुण्ड्रतिलकं - धृत्वा श्रीभगवदुपासनाञ्चसम्यक् सम्पाद्य श्रीहरिमन्दिरमासाद्य श्रीराधामाधवप्रभोदर्शनं करणीयम्।

३२ - प्रातःकाल स्नानादिक करके और उसके पश्चात् ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक करके श्रीप्रभु की उपासना अच्छी प्रकार करके श्रीहरि मन्दिर जाकर श्रीराधामाधव भगवान् का प्रतिदिन

दर्शन करना चाहिए।

३३ - **भक्तैः स्वर्गलोक जिगिमिषा कदापि न कर्तव्या ततः पुण्यक्षीणानन्तरमिहैव भूलोके कर्मानुसारेण पुनरागमनं भवतीतिनिश्चप्रचम्।**

३३ - भक्तजनों को चाहिए वे स्वर्गलोक जाने की इच्छा कभी न करें। वहाँ से पुण्य समाप्त होने पर इसी भूलोक में कर्मानुसार फिर से आना पड़ेगा यह सुनिश्चित है।

३४ - **''मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः'' इति शास्त्रीयवचनानुसारेणेदं मनः परमं चञ्चलं-वर्ततेऽतोऽस्यनिरोधः सर्वतोभावेन करणीय एवं तद्विषये श्रीमद्भगवद्गीतादि शास्त्रेषु मनोनिरोधार्थं यद्भगवता श्रीकृष्णेन समुपदिष्टं तदेव ग्राह्यम्।**

३४ - ''मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः'' अर्थात् मनुष्यों का यह मन ही संसार के बन्धन में प्रवृत्त होता है और मन ही के कारण श्रीहरि की उपासना करके भगवद्भावापत्तिरूप मोक्ष को प्राप्त करना है। अतः इस शास्त्रीय वचनानुसार यह मन अतीव चञ्चल है, इसलिए इसका निरोध सभी प्रकार से किया जाना आवश्यक है। इस विषय में श्रीमद्भगवद्गीता में मन के निरोध के लिए लिए श्रीकृष्ण भगवान् ने जो उपदेश किया उसे ही ग्रहण करना चाहिए।

३५ - **ये मनुजाः परोपकारपरायणाः सन्ति ते खलु परम-सौभाग्य-शालिनः सन्ति।**

३५ - जो मनुष्य परोपकार करते हैं वे निश्चितरूप से अतीव सौभाग्यशाली हैं।

३६ - ये जनाः स्वकीयं स्वार्थं विहाय परमार्थनिरताः सन्ति वस्तुतस्ते श्रीभगवत्कृपाऽऽस्पदाः प्रभवन्ति ।

३६ - जो मानव अपने स्वार्थ को छोड़कर परमार्थ में लगे रहते हैं यथार्थ में वे श्रीप्रभु की परम कृपा के भाजन बनते हैं।

३७ - ये चोत्कोचवृत्तिप्रवृत्ता जना वर्तन्ते ते ध्रुवं पूर्णतो मर्यादा-हननं प्रकुर्वन्ति ।

३७ - घूंसखोरवृत्ति वाले जो व्यक्ति हैं वे निश्चित पूर्णरूप से मर्यादा के विरुद्ध कार्य करते हैं।

३८ - देवोत्तरसम्पदां स्वकीयप्रयोगार्थं ये जनाः प्रयतन्ते वस्तुतस्ते हतभाग्यास्तथा च समग्रदृष्ट्या यमदण्ड-भाजा भविष्यन्ति ।

३८ - देवोत्तर सम्पत्ति को अपने प्रयोग में लेने के लिए जो व्यक्ति तत्पर रहते हैं वे वस्तुतः भाग्यहीन तथा च सभी प्रकार से यमराज द्वारा दण्ड पाने के पात्र होंगे।

३९ - तस्करवृत्तिः कदापि नाऽवलम्बनीया जनैः ।

३९ - चौरी कभी भी न करें, यह मानवमात्र को जानना चाहिए।

४० - अनृतवाणी हातव्या, यया जीवने परमोज्वलता स्यात् । तदैवानुकरणीयं नृजीवनं जायते ।

४० - मिथ्या बोलना छोड़े जिससे जीवन में परम पवित्रता एवं उज्जवता आयेगी और तभी अनुकरणीय मानव का जीवन

होगा।

४१ - **जनैः सर्वदा सत्यता समाचरणीयाऽतस्तावत् सर्वेश्वर-प्रभोरनुग्रहभाजनं भवेत्।**

४१ - मानव मात्र सब समय सत्यता का व्यवहार करें जिससे सर्वज्ञ श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपापात्र बने।

४२ - **आलस्यमपहाय सत्कर्तव्यनिरता भवन्तु।**

४२ - आलस्य को छोड़कर उत्तम कर्म करने में तत्पर रहना परम श्रेयःस्कर है।

४३ - **अनादिवैदिक श्रीनिम्बार्कसम्प्रदाय परमाद्याचार्य- -वर्याणां श्रीसुदर्शनचक्रावताराणां श्रीभगवन्निम्बार्का-चार्याणां स्वाभाविकद्वैताद्वैत-दार्शनिकसिद्धान्तः सुप्रसिद्धोऽस्ति तत्र च तेषां श्रीभगवत्परकसमु-पासनाऽपि नित्यनिकुञ्जविहारिवृन्दावनाधीश-युगलकिशोरश्रीराधाकृष्णस्यैवाऽस्ति। एकादशी-व्रतादिक्रमे च तेषां कपालवेधसिद्धान्त एव परम-विहितः।**

४३ - अनादिवैदिक श्रीनिम्बार्क सयम्प्रदाय के परमाद्याचार्यवर्य श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का स्वाभाविक द्वैताद्वैत दार्शनिक सिद्धान्त अति प्रसिद्ध है और उनकी श्री भगवत्परक उपासना भी नित्यनिकुञ्जविहारी वृन्दावनाधीश युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण भगवान् की है। और एकादशी व्रत में उनका कपालवेध सिद्धान्त ही निर्धारित है।

४४ - श्रीभगवत्सेवायां प्रमादो नैव कर्तव्योऽर्चकैः।

४४ - श्रीभगवान् की सेवा में पुजारीवर्गों को प्रमाद नहीं करना चाहिए।

४५ - ''देवो भूत्वा देवं यजेत्'' इति शास्त्रीय नियुमानुसारेण स्नात्वा शुभ्र-पीतादिवसनानि परिधार्य तदनन्तर-श्वोर्ध्वपुण्ड्रतिलकं श्यामबिन्दुयुतं ललाटे कृत्वा श्रीमन्त्रराजं जप्त्वा मन्दिरश्च गत्वा तत्र प्रणम्य तत्पश्चात् भगवत्सेवायां प्रवृत्तो भवेत्।

४५ - ''देवो भूत्वा देवं यजेत्'' अर्थात् स्वयं श्यामबिन्दुयुक्त उर्ध्वपुण्ड्र तिलकादि धारण कर पवित्रता पूर्वक देवस्वरूप होकर भगवान् की सेवा करे। इस शास्त्रीय नियम से स्नान करके पवित्र श्वेत या पीत वस्त्र धारण करके उसके पश्चात् श्यामश्री सहित उर्ध्वपुण्ड्र तिलक को ललाट पर अङ्कित करे और श्रीगोपालमन्त्रराज का जप करके मन्दिर पहुँचे और साष्टाङ्ग प्रणाम करके उसके बाद श्रीभगवत्सेवा में लगे।

४६ - व्रज-वृन्दावनादिदिव्यधाम्नि निवासं विधाय श्रीराधा-माधवभगवतः स्मरणचिन्तनं विदधाति स परमभाग्यवान् वर्तते।

४६ - व्रज-वृन्दावन आदि दिव्य धाम में निवास करके श्रीराधा-माधव भगवान् का स्मरण-चिन्तन करता है वह परम भाग्यशाली है।

४७ - **दुस्सङ्गं सर्वथातो विहाय सर्वदा परमोत्तमश्लोक-महानुभावानां सत्सङ्गः श्रीहरिकथावार्ता शास्त्रानु-शीलनं च सम्पादनीयं साधकैः ।**

४७ - दुस्सङ्ग को सभी प्रकार से छोड़कर निरन्तर परम श्रेष्ठ महानुभावों का सत्सङ्ग तथा श्रीप्रभु की सुन्दर कथा वार्ता और उत्तम शास्त्रों का मनन साधकजनों को करना चाहिए।

४८ - **श्रीवृन्दावनधाम्नः श्रीगोवर्धनस्य च परिक्रमा विधा-तव्या भक्तसाधकजनैः ।**

४८ - श्रीवृन्दावनधाम की और श्रीगोवर्धन की परिक्रमा भक्त साधक जनों को करनी चाहिए।

४९ - **श्रीधाम्नि वृन्दावने ये तरवः याश्च वीरुधः सन्ति तेषु तासु केचन ऋषयो मुनयश्च खगरूपेण तत्र निवसन्ति तथा श्रीवृन्दावनविहारिणः सततस्मरणं प्रकुर्वन्ति । अतस्ते किंवा ताः सर्वदा नितान्तरूपेण वन्दनीयाः सन्ति ।**

४९ - श्रीधाम वृन्दावन में जो वृक्ष-लतायें हैं उनमें कोई ऋषि-मुनि रूप में वहाँ निवास करते हैं और श्रीवृन्दावनविहारी भगवान् का निरन्तर स्मरण करते हैं, इसलिए वे सभी सदा सभी प्रकार से वन्दनीय हैं।

५० - **''कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसङ्गः परं व्रजेत्'' इति श्रीमद्भागवतवचनानुसारेण श्रीभगवन्नामसंकीर्तनं करणीयमेव भावुकजनैः ।**

५० - ''कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसङ्गः परं व्रजेत्'' अर्थात् भगवान् श्रीकृष्ण के संकीर्तन करने से मुक्तसङ्ग होकरश्रीभगवद्धाम की प्राप्ति करता है। इस श्रीमद्भागवत के दिव्य वचन के अनुसार भावुकजनों को श्रीभगवन्नाम संकीर्तन करना चाहिए।

५१ - **ये जना विद्यावन्तोऽपि विवेकहीनाः सन्ति ते खलु कर्तव्याकर्तव्यरहिता इतस्ततोऽटाट्यमाना वर्तन्ते।**

५१ - जो विद्यावान् पुरुष ;विवेक रहित हैं वे निश्चित ही कर्तव्य-अकर्तव्य को भूल रहे हैं और इधर उधर व्यर्थ में घूमते रहते हैं।

५२ - **मद्यपानमतीवानर्थकरमस्ति तद्विहाय गोदुग्धसेवनं कर्तव्यं जनैः। अथ सर्वे मादकपदार्थाः सर्वथैव त्याज्याः सन्ति।**

५२ - मानवमात्र को चाहिए कि वे इस अत्यन्त अनर्थ करने वाला मद्यपान उसको छोड़कर गाय के पवित्र दूध का प्रयोग करें। और नशीली सभी वस्तु सब प्रकार से छोड़ देनी चाहिए।

५३ - **पथि दृष्ट्वैव गन्तव्यमन्यथा काऽपि हानिः सम्भविष्यति।**

५३ - मार्ग में देखकर चलना चाहिए कदाचित् किसी भी प्रकार की हानि हो सकेगी।

५४ - **जलं वस्त्रपूतं कृत्वैव पेयम्।**

५४ - जल को वस्त्र से छान कर ही प्रयोग में लें।

५५ - **स्वास्थरक्षार्थं प्रभातवेलायां परिभ्रमणं परमावश्यकं विद्यते। तथा चाऽपेक्षानुसारं भैषजसेवनमपि कर्तव्यम्।**

५५ - स्वास्थ्य रक्षा के लिए प्रातःकाल भ्रमण परम आवश्यक है। और आवश्यकता के अनुसार औषधि का सेवन भी करना चाहिए।

५६ - **उषसि समुत्थाय पर्याप्तजलं पीत्वैव शौचशुद्ध्यर्थं गन्तव्यम्।**

५६ - प्रातःकाल ऊठकर विशेष जल पीकर ही शौच शुद्धि के लिए जाना चाहिए।

५७ - **सामान्यरूपेण व्यायामो विधेयो येन स्वास्थ्य रक्षा स्यात्।**

५७ - साधारण रूप से व्यायाम करना चाहिए जिससे स्वास्थ्य की रक्षा हो।

५८ - **ब्रह्मचर्यव्रतस्या तीवाऽऽवश्यकताऽस्ति येन शरीरे व्याधिर्न भवेत्।**

५८ - ब्रह्मचर्य की अत्यन्त आवश्यकता है जिससे शरीर स्वस्थ रहे और व्याधि का हटात् आक्रमण न हो।

५९ - **श्रुति-स्मृति-पुराणादिशास्त्राणामनुशीलनं कर्तव्यं साधकैः।**

५९ - साधक जनों का यह कर्तव्य है कि वे श्रुति-स्मृति-पुराण

इत्यादि शास्त्रों का मनन करें।

६० - **अद्यत्वेऽनेके जनाः ईदृशाः सन्ति ये चाऽनारतं हिंसां कुर्वन्त इतस्ततो बंभ्रम्यमाणा दरीदृश्यन्तेऽतः श्रेष्ठपुरुषाः सावधानाः सतर्काश्च भवन्तु।**

६० - आजकल बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं और जो निरन्तर हिंसा करते हुए इधर-उधर घूमते देखे जा रहे हैं इसलिए उत्तम पुरुषों को सदा सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए।

६१ - **ये च श्रीमन्तो विपुलसम्पत्तिसम्पन्नाः सन्ति तेषामिदं कर्तव्यं वर्तते यद्दीनसेवासु सत्कर्मसु देवालयेषु गोसेवासु साधुसेवासु च तत्प्रयोगो विधेयः।**

६१ - जो पर्याप्त धनीमानी महानुभाव हैं वे अपनी सम्पत्ति का विनियोग दीनसेवा में उत्तम कार्यों में भगवत्सेवा में, गोसेवा में, साधु सेवा में करें।

६२ - **प्राचीनतम ध्रुपद-धमारादिशास्त्रीयसङ्गीतपरम्परासु ये मर्मज्ञसङ्गीतज्ञाः सन्ति तथा च ये संस्कृतशास्त्रज्ञाः प्रेक्षावन्तः सन्ति तेषां सम्मानादिकमवश्यमेव सम्पादनीयं विज्ञजनैः।**

६२ - अति प्राचीन ध्रुपद-धमार आदि सङ्गीत की शास्त्रीय परम्परा में उसके मर्मज्ञ जो सङ्गीत के जानकर हैं उनका एवं संस्कृतज्ञ विद्वानों का भी सम्मान अवश्य ही विज्ञ पुरुषों द्वारा किया जाना चाहिए।

६३ - **श्रीधाम्नि वृन्दावने गावः शाखामृगाः खगा वैशाख-**

नन्दनाः कार्तिकनन्दनाश्च सन्ति तेऽपि सर्वे सौभाग्यशालिनोऽवतिष्ठन्ते ।

६३ - श्रीधाम वृन्दावन में गोमाता, बन्दर, पक्षि समूह गदहा, कुत्ते निवास करते हैं वे भी सब परम सौभाग्यशाली हैं।

६४ - **दैनिकसमाचारपत्रेषु ये चोत्तमसमाचारास्ते ग्राह्या भवन्ति, विपरीताः समाचारास्तु त्याज्या एव ।**

६४ - दैनिक समाचार पत्रों में जो श्रेष्ठ समाचार हों उनको ही ग्रहण करें और जो विपरीत समाचार हों उनको छोड़ देना चाहिए।

६५ - **श्रीभगवत्कृपाभाजनानि ते भवन्ति ये च दैन्यभावमा-श्रित्य निवसन्ति ।**

६५ - श्रीभगवत्कृपापात्र वे होते हैं जो दीनभाव से रहकर निवास करते हैं।

६६ - **परोपकारस्य परमं महत्वं वरीवर्ति, अतो हि ''लक्ष्यं विहाय दातव्यम्'' इति शास्त्रवचनानुसारेण परोपकारनिरता भवन्तु ।**

६६ - परोपकार की बड़ी महिमा है अतएव ''लक्ष्यं विहाय दातव्यम्'' इस शास्त्रीय वचन के अनुसार परोपकार परायण होना चाहिए।

६७ - **मिथः संघर्षनिरताः कदापि न प्रभवन्तु ।**

६७ - परस्पर संघर्ष में लगे रहना कभी भी हितकर नहीं है।

६८ - **कस्यामपि समस्यायां शान्त्यैव तस्या समाधानं**

विधेयम्।

६८ - किसी भी समस्या में शान्ति से ही उसका समाधान करना चाहिए।

६९ - **श्रीभगवत्कृपाप्राप्तये शास्त्रेषु विविधानि साधनानि परिवर्णितानि सन्ति तेषु भक्तेरेव श्रेष्ठत्वं वर्तते।**

६९ - श्रीभगवत्कृपा की प्राप्तिके लिए शास्त्रों में अनेक साधन कहे गये हैं, उनमें भक्ति ही परमोत्तम साधन है।

७० - **अकरणीयकार्यं कदापि माऽऽचरणीयम्।**

७० - नहीं करने योग्य कार्य को कभी भी नहीं करना चाहिए।

७१ - **मिथ ऐकान्तिकी वार्ता न श्रोतव्या।**

७१ - परस्पर में एकान्त की बात नहीं सुननी चाहिए।

७२ - **अश्लीलशब्दस्य प्रयोगः कथमपि न करणीयः।**

७२ - अश्लील शब्द का प्रयोग किसी भी प्रकार नहीं करना चाहिए।

७३ - **अतिशीघ्रता हानिप्रदाऽस्ति।**

७३ - विशेष शीघ्रता करना हानि कारक है।

७४ - **अतिदीर्घसूत्रिता नोचिता।**

७४ - अधिक दीर्घसूत्री होना उचित नहीं।

७५ - **प्राणायामसमाचरणेनाऽऽयुषो वृद्धिर्भवति।**

७५ - प्राणायाम करने से आयु की वृद्धि होती है।

७६ - **समुचित योगासनं हितकरं भवति।**

७६ - उचित योगासन हितकारी होता है।

७७ - **गोपनीया वार्ता गोप्यतया रक्षणीया ।**

७७ - गोपनीय बात गुप्त रूप से रखी जानी चाहिए।

७८ - **मनः परमचञ्चलं वर्ततेऽतोऽस्य निरोधोऽत्यावश्यकः ।**

७८ - मन अति चञ्चल है अतः इसको वश में रखना परम आवश्यक है।

७९ - **अकस्मात्कस्यचिद्गृहं नैव गन्तव्यम् ।**

७९ - हटात् किसी के घर में नहीं जाना चाहिए।

८० - **कदाचित्कस्याऽपि गृहं गन्तुमपेक्षाऽस्ति तर्हि तद्गृहस्वामिनः स्वीकृतिमादाय तद्गृहं गन्तव्यम् ।**

८० - कदाचित् किसी के घर जाने की आवश्यकता हो तो उस घर के स्वामी अर्थात् मालिक की स्वीकृति लेकर ही उसके घर में जाना चाहिए।

८१ - **क्षुधानुसारेण भोक्तव्यम् तद्विपरीताऽशनेन महती हानिः स्यात् ।**

८१ - क्षुधा के अनुसार भोजन प्रसाद करना चाहिए। उसके विपरीत भोजन से बड़ी हानि हो सकती है।

८२ - **शरीरशुद्धिर्चित्तशुद्धिः परमावश्यकीयाऽस्ति ।**

८२ - शरीर शुद्धि, मन शुद्धि की अत्यन्त आवश्यकता है।

८३ - **पाणिनीय व्याकरणशास्त्रस्याऽध्ययनमवश्यमेव - - कर्तव्यम् ।**

८३ - पाणिनीय व्याकरण की पढाई अवश्य की जानी चाहिए।

८४ - **स्वचित्तवृत्तिं स्थिरीकृत्य श्रीराधासर्वेश्वरप्रभोर्भजनं**

विधेयम् ।

८४ - अपने मन को स्थिर करके श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् का भजन करना चाहिए।

८५ - **श्रीभगवद्भक्तिसम्पादने साधनरूपेणोत्तमशास्त्रीयसंगीतस्य परमोपादेयताऽस्ति ।**

८५ - श्रीभगवद्भक्ति करने में साधन स्वरूप उत्तम शास्त्रीय संगीत अत्यन्त उपादेय है।

८६ - **मानवमात्रस्य सुखस्पृहाऽस्ति किन्तु हरेराराधनां बिना सुखं क्वाऽस्ति ।**

८६ - मनुष्यमात्र की सुख प्राप्ति की इच्छा है परन्तु श्रीप्रभु की आराधना के बिना सुख कहाँ है।

८७ - **पञ्चगव्य सेवनेन पावनताऽऽयाति ।**

८७ - पञ्चगव्य के सेवन से पवित्रता आती है।

८८ - **स्वास्थ्यरक्षार्थ कुशलचिकित्सकमाध्यमेनाऽऽयुर्वेदीयदिव्यौषधसेवनं विधातव्यम् ।**

८८ - स्वास्थ्य रक्षा के लिए अच्छे वैद्य के द्वारा आयुर्वेद की उत्तम औषधि का सेवन करना चाहिए।

८९ - **तुलसीकण्ठिकाधारणं-गोपीचन्दनेन चोर्ध्वपुण्ड्रतिलकाङ्कितादिप्रयोगेण यमदूता अपि भीयुक्ताः पलायन्ते ।**

८९ - तुलसी कण्ठी के धारण करने पर और गोपीचन्दन से उर्ध्वपुण्ड्रतिलक अङ्कित करने पर यमदूत भयभीत होकर

भग जाते हैं।

९० - **मातृ-पितृचरणेषु प्रत्यहं प्रभाते नियमितरूपेण वन्दना नितान्तरूपेण विधेया ।**

९० - प्रतिदिन प्रभातवेला में माता-पिता के चरण स्पर्श कर वन्दना करना अति आवश्यक है।

९१ - **श्रीगुरुचरणसरोरुहेषु प्रतिदिनं श्रद्धया प्रत्यूषे साष्टाङ्ग-प्रणामाः समर्पणीयास्तथा च तेषां सदाज्ञा पूर्णतः परिपालनीयास्ति ।**

९१ - श्रीगुरुचरणकमलों में प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक प्रातःकाल साष्टाङ्ग प्रणाम करना चाहिए और उनकी समुचित आज्ञा का पालन करना चाहिए।

९२ - **श्रीगुरोराज्ञां विना कुत्राऽपि न गन्तव्यम् ।**

९२ - श्रीगुरुदेव की आज्ञा के बिना कहीं भी नहीं जाना चाहिए।

९३ - **अपरजनस्यार्थवृत्तिरपेक्षा न करणीया ।**

९३ - अन्य व्यक्तियों की सम्पत्ति की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

९४ - **स्वोपार्जितार्थवृत्यैव निर्वाहो विधेयः ।**

९४ - अपने स्वयं के द्वारा अर्जित धन राशि से निर्वाह करना उचित है।

९५ - **प्रस्थानत्रयीवर्णित भोक्ता-भोग्य-नियन्तेति तत्त्वत्रय-स्य सम्यक् परिज्ञानं प्रेक्षावद्भिः कर्तव्यम् ।**

९५ - श्रीमद्भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् इस प्रस्थानत्रयी में वर्णित भोक्ता-भोग्य-नियन्ता इन तत्त्वत्रय का भली प्रकार

से ज्ञान विद्वज्जनों को करना परम अभीष्ट है।

९६ - **समयः स्वल्पः कार्याणि बहूनि सन्ति तदर्थं यथाशक्यं कयाऽपि रीत्या सर्वं विहाय श्रीसर्वेश्वर प्रभोराराधन-मेव क्षेमकरं भवति ।**

९६ - समय कम है कार्य अनेक हैं इसलिए यथावसर किसी भी प्रकार सबसे रहित होकर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की आराधना करना ही परम कल्याणकारी कार्य है।

९७ - **व्यर्थ वार्ताकरणे विवादाचरणेऽयममूल्यसमयो नैव हापनीयः ।**

९७ - निरर्थक बातों के करने में विवाद करने में इस अमूल्य समय को नष्ट नहीं करना चाहिए।

९८ - **राजनीतिकर्मणि सतां कार्यं नास्ति तदर्थमिमं विहाय श्रीभगवत्सेवाकर्मणि प्रवृत्ता भवेयुः ।**

९८ - राजनीति के क्षेत्र में प्रवृत्त होना सत्पुरुषों का कार्य नहीं है इसलिए इससे दूर रहकर श्रीभगवत्सेवा कार्य में तत्पर रहना ही उचित है।

९९ - **अनादिवैदिकसनातनवैष्णवधर्मस्य श्रेष्ठत्वं वरीवर्ति, एतावताऽस्य सर्वात्मना परिपालनं परमावश्यक-मस्ति ।**

९९ - अनादि वैदिक सनातन वैष्णव धर्म ही अति श्रेष्ठ है अतः सभी प्रकार से इसका पालन करना सर्वथा अभीष्ट है।

१०० - अयोध्यापुर्यां श्रीरामजन्मभूमिपुरातनस्थले पुनर्नव-भव्यमन्दिरनिर्माणं यथाशीघ्रं स्वदेशप्रशासकैः सद्भि-र्महात्मभिश्चैवं श्रीरामभक्तैः श्रीरामजन्मभूमि-समितिसदस्यैश्च कर्तव्यम् ।

१०० - अयोध्यापुरी में श्रीरामजन्मभूमि के प्राचीन स्थल पर फिर से नवीन और भव्य मन्दिर का निर्माण यथाशीघ्र अपने देश के सत्तारूढ प्रशासकों सन्त-महात्माओं द्वारा और श्रीराम भक्तजनों एवं श्रीरामभूमि न्यास के सदस्यों द्वारा होना चाहिए।

१०१ - त्रिवर्णेषु किंवा चतुर्वर्णेषु सच्छूद्रेषु कोऽपि विरक्त-वैष्णवीं दीक्षामादाय दैन्यं सारल्यञ्चाऽऽश्रित्य श्रीभगवद्भजनं कुर्यात्तर्हि समीचीनमेव, परमितो विपरीताचरणमाचरेत्तथा च स्वयमहं मन्यमानः सन्तिष्ठेच्चेदनर्थकरो भवति ।

१०१ - तीन वर्णों अथवा चारों वर्णों अथवा उत्तम शूद्रवर्णों में कोई विरक्त वैष्णवी दीक्षा लेकर दीनता सरलता से श्रीप्रभु का भजन करता है तब तो सुन्दर अन्यथा इसके विपरीत आचरण करे और स्वयं अभिमान में रहकर रहता है तो वह अवश्य ही अनर्थ करने वाला व्यक्ति है।

१०२ - श्रीसर्वेश्वरस्यजयोऽस्तु श्रीराधामाधवयोर्जयोऽस्तु ।

१०२ - श्रीसर्वेश्वर भगवान् की जय हो, श्रीराधामाधव भगवान्

की जय हो।

१०३ - **रसस्वरूपं श्रीराधाकृष्णयुगलं वृन्दारकवृन्दैर्वन्दित-मस्ति तद् युग्मतत्त्वं नित्यशः समुपास्यं रसिकभावुक-सद्भिर्जनैः ।**

१०३ - आनन्दस्वरूप श्रीराधाकृष्ण जो देववृन्दों से सम्पूजित हैं और उनकी सर्वप्रकार से प्रतिदिन उपासना रसिक भावुक सन्त भक्तजनों द्वारा की जानी चाहिए।

१०४ - **उद्गारशतकं ध्येयं सर्वमङ्गलसम्प्रदम् ।**
राधासर्वेश्वरराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

१०४ - सबको मङ्गल प्रदान करने वाला, ध्यान करने योग्य इस ''उद्गारशतक'' की रचना जिस प्रकार सम्भव हुई, यह श्रीसर्वेश्वर प्रभु का कृपा प्रसादरूप है।

*

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

द्वारा विरचित-

* ग्रन्थमाला *

		प्रकाशित श्लोक सं.
१. श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२. श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३. उपदेश - दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३६५
६. श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८. हिन्दु-संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९. भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३७
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५

कुल हिन्दी पद सं० २७८२ कुल श्लोक सं० २२४४
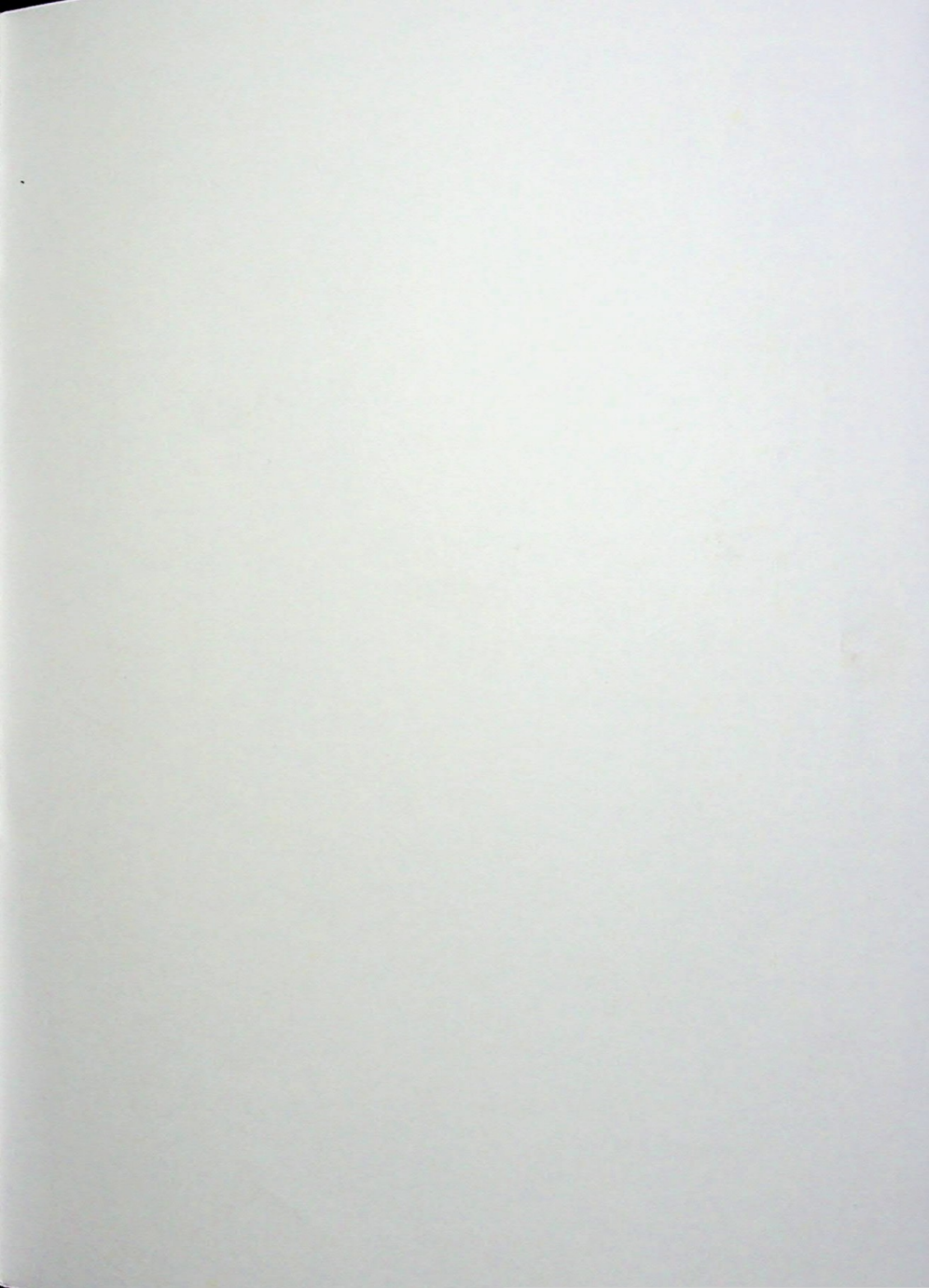
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई, 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। अपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। वज्रविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतुःसम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार (वृन्दावन), उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकशः श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाया को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता है। इसी प्रकार सं. 2026 में वजयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2061 में श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव पर विराट् सनातनधर्म सम्मेलन, 2062 में युगसन्त श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीरामकथा, 2063 में श्रीरमेश भाई ओझा द्वारा श्रीमद्भागवत कथा आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन श्रीरासलीलानुकरण आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो महनीय विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढ़ाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-संचालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित 37 ग्रन्थों में से भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं। एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आप निरन्तर क्रियाशील रहते है। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषतः उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और आपश्री के वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।